दिन- गुरुवार
ता०- 22/02/2024

अध्ययन सामग्री, बी० ए० III & I
विषय- हिन्दी, विषय:- छन्द
डॉ० वज्रांग प्रताप केसरी,
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

हरिगीतिका छन्द- इसके प्रत्येक चरण में 28 मात्रायें होती हैं। अन्त में लघु-गुरु का विधान है।

यथा- वाचक प्रथम सर्वत्र ही जय जानकी जीवन कहो।
फिर पूर्वजों के शील की शिक्षा तरंगों में बहो॥
दुःख शोक जब जो आ पड़े, सो धैर्य पूर्वक सब सहो।
होगी सफलता क्यों नहीं, कर्तव्य पथ पर दृढ़ रहो॥

छप्पय छन्द- रोला और उल्लाला छन्द के योग से छप्पय छन्द का निर्माण होता है। रोला के प्रत्येक चरण में 24 मात्रायें होती हैं, 11 और 13 मात्राओं पर यति होती है। उल्लाला के विषम चरण में 15 और सम चरण में 13 मात्रायें होती हैं। यानी यह 28 मात्राओं का छन्द है। छप्पय छन्द में पहले रोला छन्द के चार चरण तथा अन्त में उल्लाला छन्द के दो चरण होते हैं।

यथा- जिसकी रज में लोट-लोट कर बड़े हुए हैं।
घुटनों के बल सरक सरक कर खड़े हुए हैं।
परम हंस सम बाल्य काल से सब सुख पाये।
जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाये।
हम खेले कूदे हर्ष युत, जिसकी प्यारी गोद में।
हे मातृभूमि तुझको निरख, मग्न क्यों न हों मोद में॥

उक्त छन्द में प्रथम चार चरण रोला के तथा अन्त में दो चरण उल्लाला के मिलकर छप्पय छन्द का निर्माण हुआ है। कुल छह चरणों का छन्द होने के कारण ही इस छन्द का नाम छप्पय छन्द पड़ा है।